कृषि विविधिकरण एवं कृषक उत्पादक संघ हेतु व्यावसायिक तकनीकें विषय पर एक दो दिवसीय प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली द्वारा दिनाँक 18 से 19 जनवरी, 2020 तक कृषि विविधिकरण एवं कृषक उत्पादक संघ हेतु व्यावसायिक तकनीकें विषय पर एक दो दिवसीय प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र, कटिया, सीतापुर-II के वैज्ञानिक फसल सुरक्षा डॉ॰ दया शंकर श्रीवास्तव के नेतृत्व में ओज़ोन कृषक उत्पादक संघ, सीतापुर के 20 सदस्यों ने सहभागिता की। अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, बरेली डॉ॰ राज करन सिंह ने सभी का संस्थान परिसर में आगमन पर हार्दिक स्वागत किया। अपने कृषक उत्पादक संघ के सदस्यों के रूप में सदस्यों के दायित्वों, कार्य करने की दिशा तथा सफलता प्राप्ति के लिए जिन जिन बातों का विशेष ध्यान रखना है उन बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की। साथ ही उन्होंने उत्पाद केन्द्रित कार्य करने, उत्पाद की आकर्षक पैकिंग, ब्रांडिंग करने तथा सफलतापूर्वक उसका विपणन करने के गुर भी बताए। श्री राकेश पाण्डे, विषय वस्तु विशेषज्ञ, फसल विज्ञान ने फार्म मशीनरी बैंक की स्थापना, फसल अवशेष प्रबन्धन, गन्ने में अन्तः फ़सली खेती, गन्ने की पौधशाला एवं ट्रेंच विधि, गेहूँ की फसल से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यदि सभी सदस्य सामान्य खेती के आदानों की खरीद तथा अपने उत्पादों का विक्रय समूहिक रूप से कृषक उत्पादक संघ के माध्यम से करने लगें तो इसी से उनकी खेती की लागत काफी कम हो जाएगी तथा उन्हें अपने उत्पाद का बेहतर मूल्य प्राप्त करने में मदद मिलेगी। इसके पश्चात डॉ॰ अमित कुमार पिप्पल ने सभी सदस्यों को कृषि विज्ञान केन्द्र औषधीय वाटिका तथा केन्द्र के अनुदेशात्मक फार्म का भ्रमण कराया तथा एकीकृत मत्स्य सह पशुपालन सह उद्यान के मॉडलों के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दी। श्री धर्मेन्द्र कुमार मिश्रा, सहायक सामान्य प्रबन्धक, नाबार्ड ने कृषक समूहों तथा कृषक उत्पादक संघों के साथ अपने अनुभवों को साझा करते हुए कृषक उत्पादक संघों के लिए बैंकों तथा नाबार्ड कि योजनाओं के बारे में जानकारी दी। डॉ॰ दया शंकर श्रीवास्तव ने वैज्ञानिक फसल सुरक्षा, आई॰पी॰एम॰, जैविक खेती तथा बायो-एजेंट्स के सम्बन्ध में जानकारी दी।

दिनाँक 19 जनवरी, 2020 को अनुज चौहान, वरिष्ठ वैज्ञानिक, पशु अनुवंशिकी विभाग ने सूकर की विभिन्न प्रजातियों के साथ -साथ सूकर पालन के विषय में विस्तार से जानकारी दी। डॉ॰ राज नारायन, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान ने मुर्गीपालन (ब्रोयलर/लेयर), बटेर पालन, टर्की तथा गिनी फाउल के पालन के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी देते हुये बताया कि कुक्कुट पालन में भी विविधिकरण कि आवश्यकता है अतः बटेर पालन, टर्की तथा गिनी फाउल के पालन किसान भाई अधिक अपनायें, इसमें सहनशीलता अधिक होने के कारण टीकाकरण आदि पर व्यय कम होता है। उन्होंने इन पक्षियों के आवास, आहार, टीकाकरण, देखभाल, व्यावसायिक पालन आदि के सम्बन्ध में भी जानकारी दी। डॉ॰ एस॰के॰सिंह, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, जेड॰टी॰एम॰यू॰ ने संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि जय गोपाल केंचुआ पालन तथा पशु चॉकलेट ऐसी तकनीकें हैं जिन्हें कृषक उत्पादक संघ अपनी आय का साधन बना सकते है साथ ही इनके क्षेत्र में प्रसारण से कृषि उत्पादन व दुग्ध उत्पादन भी बढ़ेगा। उन्होंने डेयरी व्यवसाय को भी एफ॰पी॰ओ॰ के माध्यम से सामूहिक रूप से करने कि सलाह दी। श्री रंजीत सिंह, उद्यान वैज्ञानिक ने बताया कि सीतापुर जनपद प्रदेश कि राजधानी लखनऊ के बहुत करीब है ऐसी स्थिति में वहाँ के कृषकों के लिये पशु पालन, कुक्कुट पालन तथा सब्जी उत्पादन बहुत लाभकारी व्यवसाय हैं। उन्होंने फल, फूल,

सब्जी उत्पादन तथा परिरक्षण के सम्बन्ध में जानकारी दी तथा मौनपालन, मशरूम उत्पादन, नर्सरी व्यवसाय, बे-मौसमी सब्जी उत्पादन आदि को सहायक व्यवसाय के रूप में अपनाकर परिवार की आय बढ़ाने कि सलाह दी। सभी सदस्यों ने दोपहर भोजन के पश्चात संस्थान के संग्रहालय का भ्रमण किया तथा इसकी बहुत सराहना की।